'Teaching has shifted to experimentation'

TIMES NEWS NETWORK

Indore: Space around which any faculty's performance is judged is not just the school, but also the entire educational universe, where each and every student may learn even from the internet, said IIM-Bangalore faculty professor PD Jose on Monday.

"Today the students are digital masters, visually oriented multi-taskers, who look for personalised learning and prefer learning for skills, and are impatient and always want new visual experiences," said prof Jose. He was addressing faculty at the inauguration of the ninth edition of faculty development programme (FDP) in IIM-Indore. Mentioning about the 21st century learner, prof Jose gave a lecture on 'Learning Reimagined...For the Next Century' and said that up-to-date decisions cannot be made without understanding why and how students learn.

TOI

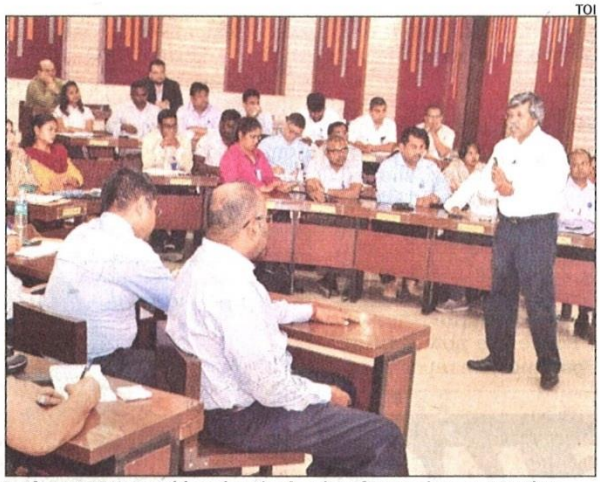

Professor PD Jose addressing the faculty of IIM-Indore on Monday

He noted that the number of open online courses has increased tremendously from the year 2012 to 2017.

"Today education is not just about passing information; as we live in a world where information is freely available. Today teaching and learning have shifted from being passive to experimentation, which includes text-books, internet, social media, audio-visuals, etc," he said.

He then discussed about the changing landscapes like globalisation with competitive domestic and international student and faculty market, greater global mobility of academics, students and academic brands.

Professor Jose also discussed about the future of education. "The future learning will be personal, social and mastery based, collaborative, partnership driven and legacy and brand would be important. This would help in creating a whole new range of entrepreneurs and new business models, which would be constantly evolving," he said.

IIM-Indore director professor Rishikesha T Krishnan addressed the participants and said that any discussion about higher education includes topics like shortage and quality of faculty. "There is often shortage of resources, but we can take the responsibility to bring about a change, by devoting our time in this programme," he said.

The Times of India, April 25, 2017, Page-4

समय के साथ बदल रहे लर्निंग मॉडल पैटर्न

आईआईएम इंदौर में एफडीपी का नवां संस्करण शुरू

यंग रिपोर्टर • इंदौर
editor@peoplessamachar.co.in

भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम) इंदौर में सोमवार को एफडीपी के नवें संस्करण की शुरुआत की गई। पांच सप्ताह के इस विशेष पाठ्यक्रम में कॅरियर विकास की शिक्षा दी जाएगी। इस अवसर पर मुख्य अतिथि आईआईएम बैंगलुरु के प्रो. पीडी जोस और प्रो. दिब्याद्युती रॉय ने समय के साथ बदलते लर्निंग मॉडल पैटर्न पर संबोधित किया।

प्रो. जोस ने 'लर्निंग रीइमेजिंड....अगली शताब्दी के लिए' विषय पर कहा कि शैक्षिक जगत में तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं। 20वीं शताब्दी के सीखने के मॉडल के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि सीखने और शिक्षण के पैटर्न बदल गए हैं। वर्तमान में शिक्षा सिर्फ सूचना प्रदान करना ही नहीं है, चूंकि हम ऐसे विश्व में रहते हैं जहां सूचना मुफ्त में सुलभ है। आज शिक्षण निष्क्रिय रहने की अपेक्षा प्रायोगिकता में तब्दील हो चुका है। इसमें पाठ्य पुस्तकें, इंटरनेट, सामाजिक मीडिया, दृश्य-श्रव्य इत्यादि भी शामिल हैं। उन्होंने वैश्वीकरण जैसे बदलते परिदृश्य के तहत कड़े घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्टूडेंट्स, शिक्षाविदों, छात्रों और शैक्षिक ब्रांडों पर भी चर्चा की।

डिजिटल मास्टर स्टूडेंट्स

21वीं सदी के सीखने के बारे में बताते हुए प्रो. जोस ने कहा कि यदि हमें यह समझ में नहीं आ रहा है कि स्टूडेंट्स को क्या सीखना है और क्यों सीखना है तो हम अध्यापन नहीं कर सकते है। आज का स्टूडेंट्स डिजिटल मास्टर है, जो व्यक्तिगत शिक्षा की तलाश कर रहा है और हमेशा नए दृश्य (विजुअल) अनुभवों की तलाश करता है। समारोह में प्रो. कृष्णन ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि उच्च शिक्षा के बारे में संकाय की कमी और उनकी गुणवत्ता जैसे विषय चर्चा में रहते हैं। संसाधनों की कमी अक्सर रहती है, लेकिन हम इस कार्यक्रम में अपने समय का निवेश कर यह जिम्मेदारी उठा सकते हैं। एफडीपी अनुसंधान और सीखने के कौशल पर अधिक केंद्रित है। पाठ्यक्रम को संकाय के कौशल में सुधार और संवर्धित करने के लिए संरचित किया गया है।

Peoples Samachar, April 25, 2017, Page-15

फैकल्टी को पता हो कि क्या सीखना चाहते हैं स्टूडेंट्स

आईआईएम इंदौर में फैकल्टी डवलपमेंट प्रोग्राम के इनॉग्रेशन अवसर पर बोले प्रो. जोस

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

इंदौर ● यदि फैकल्टी को अगर यह नहीं समझ आ रहा है कि स्टूडेंट्स को क्या सीखना है और क्यों सीखना है तो वह टीचिंग नहीं कर सकता है। यह कहना है आईआईएम बेंगलूरु के प्रो. पीडी जोस का। वह सोमवार को आईआईएम इंदौर के 9वें फैकल्टी डवलपमेंट प्रोग्राम के इनॉग्रेशन अवसर पर संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में स्टूडेंट्स डिजिटल मास्टर हैं। वह पर्सनलाइजड लर्निंग की चाहत रखते हैं। इसके साथ ही वह लर्निंग फॉर स्किल को प्रीफरेंस देते है और हमेशा कुछ नया सीखना चाहते हैं।

सिर्फ इन्फॉर्मेशन शेयर करना नहीं एजुकेशन

उन्होंने कहा कि एजुकेशन का मतलब सिर्फ इन्फॉर्मेशन शेयर करना ही नहीं है। हम ऐसे विश्व में रहते हैं जहां सूचना मुफ्त में उपल्बध है। अब शिक्षा एक्सपेरिमेंटल हो गई है। इसमें बुक्स, इंटरनेट, सोशल मीडिया, ऑडियो विजुअल आदि शामिल है। मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्सेस (एमओओसीएस) की संख्या तेजी से बढ़ी है। इसलिए अब फैकल्टी की परफॉर्मेंस सिर्फ स्कूल के अंदर ही जज नहीं की जाएगी। उसे पूरे एजुकेशनल यूनिवर्स में कम्पेयर किया जाएगा। वर्तमान एजुकेशन सिस्टम में कॉस्ट कम करने, फैकल्टी और इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोवाइड करना बड़ा चैलेंज है।

रखें बच्चों जैसी क्यूरोसिटी

कार्यक्रम में प्रो. दिब्याद्युती रॉय ने कहा कि फैकल्टी में बच्चों जैसी क्यूरोसिटी होनी चाहिए ताकि वह अधिक से अधिक सीख सके। फैकल्टी डवलपमेंट प्रोग्राम के इस बैच में 50 स्टूंट्स शामिल है। आईआईएम इंदौर के डायरेक्टर प्रो. ऋषिकेश टी कृष्णनन ने कहा कि हायर एजुकेशन में हमेशा शिक्षकों की कमी और उसकी क्वालिटी को लेकर बाते होती है। संसाधनों की कमी अकसर रहती है, लेकिन हम इस तरह के फैकल्टी डवलप प्रोग्राम में टाइम का इन्वेस्टमेंट करते हुए यह जिम्मेदारी उठा सकते है। फैक्लटी डवलपमेंट प्रोग्राम रिसर्च और सीखने के स्किल पर फोकस्ड है और इसका कॅरिकुलम फैकल्टी की इन स्किल्स को बढ़ाने के लिए किया है।

Patrika, April 25, 2017, Page-16

आईआईएम में एफडीपी कोर्स प्रारंभ

इंदौर। नईदुनिया रिपोर्टर

आज सीखने और सिखाने का पैटर्न बदल गया है। आज शिक्षण निष्क्रिय रहने की अपेक्षा प्रायोगिकता में तब्दील हो चुका है, जिसमें पाठ्यपुस्तकें, इंटरनेट, सोशल मीडिया, ऑडियो-विजुअल आदि शामिल है। यह बात आईआईएम बैंगलुरू के प्रो. पीडी जोस ने आईआईएम इंदौर में संकाय विकास कार्यक्रम (एफडीपी) के नौवें संस्करण के उद्घाटन अवसर पर कहे। विभिन्न प्रबंधन संकायों के करियर के विकास के लिए पांच सप्ताह के विशेष पाठ्यक्रम एफडीपी के नौवें संस्करण का उद्घाटन सोमवार को हुआ। यहां आईआईएम के प्रो. दिब्याद्युती रॉय, प्रो. ऋषिकेश टी कृष्णन उपस्थित थे।

Nai Dunia, April 25, 2017, Page-15

9th edition of FDP begins at IIM Indore

Education system needs to ensure reduction in marginal cost: IIM-B Prof

• OUR STAFF REPORTER
INDORE

IIM Bangalore faculty member Prof PD Jose here on Monday stressed on the need for today's education system to work on reducing the marginal cost and provide good schools, faculty and infrastructure to students.

"The future learning spaces will be built collaboratively with investors, edu-prenuers, technologists and socially networked, digitally fluent and tech-savvy students," he said while addressing inaugural function of ninth edition of Faculty Development Programme (FDP) commenced at IIM Indore on Monday.

Jose was the chief guest for the inaugural ceremony.

Jose spoke on the topic "Learning Reimagined... For the Next Century".

His talk revolved around massive open online courses (MOOCs), and how the education world is changing.

IIM Bangalore faculty member Prof PD Jose lighting traditional lamp at inaugural ceremony of ninth edition of FDP at IIM Indore on Monday. FP PHOTO

"Today education is not just about passing information; as we live in a world where information is freely available. Today teaching and learning have shifted from being passive to experimental, which includes text-books, internet, social media, audio-visuals, etc," he said.

Mentioning about the 21st Century Learner, Jose noted: "We cannot make informed decisions or pedagogy if we don't first understand why and how students learn."

"Today the students are digital masters, visually oriented multi-taskers who look for personalised learning, who prefer learning for skills, and are impatient and always looking for new visual experiences," he said.

He said that the number of MOOCs has increased tremendously from the year 2012-2017.

"Hence, the space around which any faculty's performance is judged is not just the school, but also the entire educational universe, where each and every student may learn even from the internet via MOOCs."

Addressing the FDP participants, IIM Indore director Prof Rishikesha T Krishnan noted that any discussion about higher education includes topics like shortage and quality of faculty.

"There is often shortage of resources, but we can take the responsibility to bring about a change, by devoting our time in this programme," he said.

He mentioned that the FDP focuses more on research and learning skills and the curriculum is structured to improve and enhance these skills of the faculty.

Free Press, April 25, 2017, Page-2

सीखने के लिए बच्चे जैसी जिज्ञासा होना जरूरी

आईआईएम इंदौर में फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का नौवां संस्करण प्रारंभ

दबंग रिपोर्टर ✡ इंदौर

आईआईएम में फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम (एफडीपी) का नौवां संस्करण सोमवार से शुरू हुआ। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि आईआईएम बेंगलुरु के प्रो. पीडी जोस थे। आईआईएम इंदौर के डायरेक्टर प्रो. ऋषिकेश टी कृष्णनन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। आईआईएम इंदौर के प्रो. दिव्याद्युती रॉय ने कार्यक्रम में शामिल 50 प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा प्रतिभागी एक जिज्ञासु बच्चे के समान जितना संभव हो सके उतना लाभ अर्जन करने का प्रयत्न करें।

कार्यक्रम को संबोधित करते प्रो. पीडी जोस।

प्रो. कृष्णनन ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा उच्च शिक्षा में संकाय की कमी और उनकी गुणवत्ता जैसे विषय चर्चा में रहते हैं। संसाधनों की कमी अक्सर रहती है, लेकिन हम इस कार्यक्रम में अपने समय का निवेश कर यह एक परिवर्तन लाने की जिम्मेदारी उठा सकते हैं। उन्होंने उल्लेख किया कि एफडीपी अनुसंधान और सीखने के कौशल पर अधिक केंद्रित है और पाठ्यक्रम को संकाय के कौशल में सुधार और संवर्धित करने के लिए संरचित किया गया है।

अब शिक्षण अकादमिक नहीं प्रायोगिक

प्रोफेसर पी.डी. जोस ने 'लर्निंग रीइमेजिंड...अगली शताब्दी' विषय पर विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा आज की शिक्षा सिर्फ जानकारी के बारे में नहीं है, जैसा कि हम ऐसी दुनिया में रहते हैं जहां जानकारी स्वतंत्र रूप से उपलब्ध है आज शिक्षण और सीखने ने प्रयोगात्मकता से निष्क्रिय किया है, जिसमें पाठ-किताबें, इंटरनेट, सोशल मीडिया, ऑडियो-विजुअल इत्यादि शामिल हैं। 21वीं सदी के विद्यार्थियों के बारे में चर्चा करते हुए उन्होंने कहा अगर हम यह समझ नहीं पा रहे हैं कि हम छात्रों को क्यों और कैसे सिखाते हैं तो हम समझदार अध्यापन नहीं करा सकते, क्योंकि आज का विद्यार्थी डिजिटल मास्टर हैं, जो कि व्यक्तिगत शिक्षा की तलाश कर रहा है, वह नए कौशल और तकनीकों को जानने की चाह रखता है।

Dabang Dunia, April 25, 2017, Page -13